Class: VIII **Subject: Hindi**

पाठ-1 : लाख की चूड़ियाँ
लेखक- कामतानाथ

शब्दार्थ :

1. **चाव** – चाह
2. **सलाख** – सलाई
3. **पैतृक** – पूर्वजों का
4. **खपत** – माल की बिक्री
5. **फबना** – सजना
6. **कसर** – घाटा पूरा करना
7. **मचिया** – बैठने के उपयोग में आने वाली सुतली आदि से बुनी छोटी/चौकोर खाट
8. **वस्तु विनिमय**- पैसों से न खरीदकर एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना
9. **मुख़ातिब** – देखकर बात करना
10. **डलिया**- बाँस का बना एक छोटा पात्र

प्रश्न/उत्तर:

प्र1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?

उत्तर- लेखक अपने मामा के गाँव चाव से इसलिए जाता था क्योंकि उसे बदलू बहुत अच्छा लगता था। वह लेखक को सुंदर-सुंदर लाख की गोलियाँ बनाकर देता था। यह गोलियाँ लेखक को खुश कर देती थी। लेखक बदलू को मामा न कहकर काका बुलाता था क्योंकि गाँव के सारे बच्चे उसे 'बदलू काका' कहकर बुलाते थे।

प्र2. वस्तु-विनिमय क्या हैं? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है?

उत्तर- वस्तु - विनिमय पद्धति का अर्थ है - किसी वस्तु को लेने के लिए अन्य वस्तु देना। जब हम कोई चीज खरीदने के लिए पैसे न देकर कोई अन्य वस्तु दें उसे वस्तु विनिमय कहते हैं।

प्र3. 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं।' - इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर- इन पंक्तियों से लेखक ने समाज में बढ़ती बेरोज़गारी और बेकारी की समस्या की ओर संकेत किया है। जिस काम को दस व्यक्ति अलग-2 ढ़ंग से करते थे वो अब अकेली मशीन लाखों लोगों का काम स्वयं कर देती है। इससे अन्य लोग बेकार हो जाते हैं या यूँ कहे कि उनके हाथ काट दिए गए हैं। इस पाठ में छोटे उद्योग वालों की असीम पीड़ा को दिखाया गया हैं।

प्र4. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?

उत्तर- बदलू के मन में उसके रोज़गार छिन जाने की व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी। इसलिए लेखक बदलू से मिलने के बाद सोचता हुआ कहता है, "इस मशीनी युग ने कितने ही लोगों के हाथ काट दिए।" इस का अर्थ है- मशीनों के आने से कितने ही लोगों का काम बंद हो गया।

प्र5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर- मशीनी युग के आने से बदलू का जीवन पूरी तरह बदल गया। उसकी हालत दयनीय हो गई। उसका काम बंद हो गया। उसकी गाय बिक गई। घर में गरीबी आ गई। उसका शरीर कमज़ोर हो गया।

पाठ-2 : बस की यात्रा
लेखक- हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ :

1. **निमित्त** – साधन
2. **गोता** – डुबकी लगाना
3. **इत्तफ़ाक**- संयोग
4. **श्रद्धा** – सम्मान
5. **वृद्धा** – बूढ़ी
6. **बियाबान** – जंगल
7. **रंक**- गरीब
8. **बेताबी** – बेचैनी
9. **अंत्येष्टि**- दाह कर्म/ अंतिम संस्कार
10. **अंतिम विदा** – मरने से पूर्व की विदाई

प्रश्न/उत्तर:

प्र1. "मैने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।" लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जाग गई?

उत्तर- लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धधा इसलिए जाग गई क्योंकि उन्हें बस के टायरों की स्थिति का पूरी तरह ज्ञान था। फिर भी वे अपनी जान हथेली पर रखकर उस बस में यात्रा कर रहे थे।

प्र2. "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते।' लोगों ने यह सलाह क्यों दी?

उत्तर- लोगों ने लेखक और उसके मित्रों को बस में यात्रा न करने की सलाह इसलिए दी क्योंकि बस अंत्यत पुरानी हो चुकी थी। उसका कोई भरोसा नहीं कि कब चलते-चलते रूक जाए। कुछ लोग तो शाम वाली इस बस को डाकिन कहते थे।

प्र3. "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।"लेखक को ऐसा क्यों लगा?

उत्तर- जब लेखक बस के अंदर बैठा तो कुछ देर बाद इंजन चालू हुआ। लेखक को ऐसा लगा मानो सारी बस ही इंजन के समान धक-धक हिलने-डुलने लगी हो। अब लेखक यह सोचने पर विवश हो गया कि वह बस में बैठा है या इंजन के अंदर बैठा है।

प्र4. "गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।" लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

उत्तर- जब लेखक ने हिस्सेदार साहब की यह बात सुनी कि बस अपने आप चलेगी तो उसे बहुत हैरानी हुई क्योंकि बस बहुत अधिक पुरानी हो चुकी थी। उसे देखकर ऐसा लगता था कि मानों वह सदियों के निशान लिए हुए थी। उसका हर पुर्ज़ा हिल रहा था।

प्र5. "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।" लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर- लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन इसलिए समझ रहा था क्योंकि उसके मन में यह चल रहा था कि न जाने कब कौन - सा पेड़ आकर बस से टकरा जाए या बस पेड़ से टकरा ना जाए । यही सब बातें सोचकर लेखक मन ही मन डर रहा था।

पाठ-3 : दीवानों की हस्ती
कवि-भगवती चरण वर्मा

शब्दार्थ :

1. **हस्ती** - अस्तित्व
2. **आलम** - दुनिया
3. **दीवाना** - पागलपन
4. **असफलता** - निराशा
5. **आबाद** - खुश रहो
6. **निसानी** - चिह्न
7. **उर** - हृदय
8. **धूल उड़ाना**-मदमस्त करना
9. **छककर**- अच्छी तरह तृप्त होकर
10. **स्वच्छंद** - अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला

प्रश्न-उत्तर :

प्र1. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने अपने आने को 'उल्लास' इसलिए कहा क्योंकि उसके आने से लोगों का मन खुश हो जाता है और जब वह जाने लगता है तो लोगों के मन में दुख पैदा होता है। उसकी कमी अनुभव होती है। इसलिए उसके जाने का गम आँसू बनकर बह जाता है।

प्र2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटाने वाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न है?

उत्तर- कवि भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटाने के लिए कहता हैं पंरतु वह सफल नहीं हो पाता। वह अपनी असफलता को एक भार की तरह लेता है। कवि दुखी इसलिए है कि उसकी निराशा बढ़ती ही जा रही है। कवि अपने आप को असफल मानता है।

प्र3. कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?

उत्तर- हम भिखमंगों की दुनिया में..... चले। इन पंक्तियों का भाव मन को छूता है क्योंकि कवि भिखारियों की दुनिया में बिना स्वार्थ के प्यार लुटा रहा है। पंरतु इस काम में उसे पूरी सफलता नहीं मिली। इस लिए उसके मन में निराशा है।

पाठ- 4 : भगवान के डाकिए
कवि-रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ :

1. **बाँचना** - पढ़ना
2. **आँकना** - अनुमान करना
3. **पाँख**- पंख, पर
4. **सौरभ**- सुंगध
5. **तैरते**- उड़ते
6. **तिरता**- उड़ता
7. **महादेश**- कोई बड़ा देश

प्रश्न-उत्तर:

प्र1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- क्योंकि यह भगवान के संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है। बादल शीतलता का संदेश देता है और पक्षी सुगंधित वायु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेकर जाते है। प्रकृति के दोनों तत्व अपना-2 काम अच्छी तरह निभा रहें है। इस लिए कवि ने इन्हें डाकिए कहा है।

प्र2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते है?

उत्तर- वह बहुत सी बातें पढ़ पाते है वह प्रेम और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते है। वह एक देश या दूसरे देश में भेद नहीं रखते। एक देश का उठा बादल दूसरे देश में बरस सकता हैं।

प्र4. "एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है"-कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि एक धरती दूसरी धरती को प्यार भेजती है जो सुगंध, प्रेम और भाईचारे का प्रतीक है। वह दूसरे देश में जाकर प्यार और उत्साह का वातावरण बनाती है। कोई भी देश ऐसा वातावरण पाकर उन्नति कर सकता है।

पाठ - 5 क्या निराश हुआ जाए (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

शब्दार्थ:

1. **गुण** – विशेषता
2. **निरीह** – बेचारे
3. **मनीषियों** – चिंतन करने वाले
4. **परीक्षित** – जांचे हुए
5. **आलोड़ित** – उथल - पुथल
6. **पर्याप्त** – काफ़ी
7. **अवांछित** – जो चाही न जाए
8. **निर्ज़र** – जहाँ कोई आदमी न हो
9. **दकियानूसी** – पुराने विचारों वाला
10. **कातर मुद्रा-** डरा हुआ

प्रश्न-उत्तर:

1.लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दियत है, फिर भी वह निराश नहीं हैआपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर: लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगो ने उन्हें भी धोखा दिया है, लेकिन फिर भी वह निराश नहीं हैं क्योंकि लेखक का यह मानना है कि अगर वह उन धोखों को याद करेंगे तो उनका मन निराशा से भर जाएगा और तब अनके लिए किसी पर विश्वास करना मुश्किल हो जाएगा, और उन्हे भरोसा है कि लोगो में मनुष्यता व आपसी प्रेम अभी भी जिंदा है।

2. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रुप ले सकता है?

उत्तर: जब हम किसी व्यक्ति के दोषों का पर्दाफ़ाश करते हैं, तो कई बार वह व्यक्ति क्रोधित होकर बदला निकालने के प्रयास में हमें हानि पहुँचा सकता है। ऐसे में दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रुप ले सकता है।

3. आजकल के बहुत से समाचार – पत्र या शमाचार – चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश क रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की की सार्थकता पर तर्क सहित चिवार लिखिए।

उत्तर: लोगों के ग़लत कर्मों का पर्दाफ़ाश करना जरुरी है। समाज में किसी भी तरह की हानि न पहुँचे इसलिए यह फायदेमंद है। इससे लोग सतर्क व सावधान हो जाते हैं।

पाठ-6 : यह सबसे कठिन समय नहीं
कवि-जया जादवानी

शब्दार्थ :

1. **खबर**-सूचना
2. **वक्त** – समय
3. **डूबना** – अस्त होना
4. **आखिरी** – अंतिम
5. **हिस्सा** – अंश
6. **प्रतीक्षा** – इंतज़ार
7. **गंतव्य** – पहुँचने का स्थान
8. **थामना** – पकड़ना
9. **झरती** – गिरती
10. **तमाम** – सारे

प्रश्न-उत्तर:

प्र1. "यह कठिन समय नहीं है?" यह बताने के लिए कविता में कौन-2 से तर्क प्रस्तुत किए गए है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवयित्री कहती है कि चिड़िया की चोंच में अभी भी दाना फँसा हुआ है। पेड़ से गिरती पत्तियों को थामने के लिए अभी भी एक हाथ तैयार है। अभी भी एक व्यक्ति दूसरे को जल्दी वापिस आने के लिए कहता है। अभी भी एक उम्मीद है कि अंतरिक्ष के पार की दुनिया से आने वाली बस सुरक्षित लोगों की सूचना लेकर आएगी।

प्र2. चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है? वह तिनकों का क्या करती होगी? लिखिए।

उत्तर- चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में इस लिए है क्योंकि उसे अपने उद्देश्य की प्राप्ति हो चुकी है। तिनका उसके परिश्रम का परिणाम है। तिनके से वह घोंसला बनाती है और अपने जीवन का आंरभ करती है।

प्र3. "नहीं" और "अभी भी" को एक साथ प्रयोग करके तीन वाक्य लिखिए और देखिए 'नहीं' और 'अभी भी' के पीछे कौन-2 से भाव छिपे हो सकते है?

उत्तर- (1) समाज में अभी भी ईमानदार लोगों की कमी नहीं है।

(2) लोगों के मन में अभी भी अंध-विश्वास की कमी नहीं है।

(3) राकेश ने कहा कि वह नहीं आ सकता क्योंकि वह अभी भी सो रहा है।

(4) यहाँ अभी भी वर्तमान का बोध करवाता है। नहीं मन की इच्छा होने या न होने का बोध करवा रहा है।

पाठ-7 : कबीर की साखियाँ
(कबीर जी)

शब्दार्थ:

1. **ज्ञान** - जानकारी
2. **कर-** हाथ
3. **दहुँ-** दस
4. **दिसि-** दिशा
5. **बैरी-** दुश्मन
6. **आपा-** अहं
7. **म्यान-** तलवार रखने का कोष
8. **सुमिरन-** ईश्वर के नाम का जप, स्मरण
9. **दुहेली** - दुख में पड़ा हुआ, कष्टसाध्य
10. **गारी** - गाली, अपशब्द

प्रश्न-उत्तर:

प्र1. 'तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं- उक्त उदाहरण से कबीर जी क्या कहना चाहते है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीर जी कहना चाहते हैं कि हमें किसी भी वस्तु की सुंदरता से अधिक उसके उपयोग को महत्त्व देना चाहिए।म्यान चाहे कितनी भी सुंदर क्यों न हो परन्तु उपयोग तो तलवार का ही होता है।

प्र2. पाठ की तीसरी साखी-जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै यह तो सुमरिन नाहिं' के द्वारा क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर- इन पंक्तियों में कबीर जी कहना चाहते है कि चाहे आप सारा दिन भगवान का नाम लेते रहो परन्तु यदि तुम मन से उसे याद नहीं करते तो यह भक्ति सच्ची नहीं हैं।

प्र3. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीर जी घास की निंदा करने से मना इसलिए करते हैं क्योंकि घास नरम होती है और हम उसे हमेशा पैरों से कुचलते रहते हैं। कबीर 'घास' शब्द का अर्थ 'गरीब' भी मानते हैं जो असहाय और लाचार है पंरतु जब 'गरीब' व्यक्ति जागृत होता है तो स्वयं को पीड़ा पहुँचाने वाले को अत्यधिक कष्ट और पीड़ा पहुँचाता है।